राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक-4] दसवीं विधान सभा के चतुर्थ सत्र का छठा दिवस [संख्या-4

मंगलवार,

28 मार्च, 1995

राजस्थान विधान सभा की बैठक 11·00 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री शांतिलाल चपलोत, उपाध्यक्ष, पदासीन।)

शोकाभिव्यक्ति

श्री हरिदेव जोशी, पूर्व मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल तथा वर्तमान सदस्य, राजस्थान विधानसभा के निधन पर

श्री उपाध्यक्ष : श्री हरिदेवजी जोशी, पूर्व मुख्य मंत्री एवं राज्यपाल तथा वर्तमान सदस्य, राजस्थान विधान सभा के निधन पर शोक प्रकट किया जायेगा। सदन के नेता।

श्री भैरोंसिंह शेखावत (मुख्य मंत्री) : उपाध्यक्ष महोदय, मुझे इस बात का बहुत ही दुःख है कि राजस्थान के स्वतन्त्रता संग्राम के एक अग्रणी और इस सदन के माननीय सदस्य श्री हरिदेवजी जोशी का आज प्रातः काल साढ़े आठ बजे बम्बई हॉस्पिटल में निधन हो गया। जोशीजी वैसे तो पिछले कई माह से अस्वस्थ थे लेकिन लगभग एक माह पूर्व उनका ब्रेन हेमरेज हुआ और उसके बाद उनको बम्बई हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। आज प्रातः काल उनका देहावसान हुआ। लगातार मेरा सम्पर्क था और कुछ ऐसा लग रहा था कि उनके स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है। सुधार की दृष्टि से उपचार भी ठीक चल रहा था और साथ ही उपचार का रेस्पोंस भी उनके शरीर पर अच्छा हो रहा था। हम सब को आशा थी कि जोशीजी स्वस्थ होकर वापस हमारे बीच में उपस्थित हो जायेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय, जोशीजी को किन शब्दों में श्रद्धांजलि अर्पित करूं, यह बहुत ही समस्या है। 1952 से लेकर आज तक अलग अलग दलों में हम इस विधान सभा के सदस्य रहे हैं इस विधान सभा में सब प्रकार का संघर्ष और विरोध होने के उपरान्त भी व्यक्तिगत सम्बन्ध इस प्रकार के रहे हैं कि कोई व्यक्ति यह कहने में संकोच नहीं कर सकता कि हमारे राज-नैतिक सम्बन्धों के साथ-साथ एक प्रकार से पारिवारिक सम्बन्ध भी रहे हैं। जोशी जी जब मंत्री नहीं थे, कांग्रेस पार्टी के ही मंत्री थे, उस समय हम एम. एल. एज. क्वार्टर्स में साथ रहते थे। उस समय जिस

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

प्रकार की आपस में मिलने-जुलने और रहने की परिस्थितियां थीं उनके कारण उनके परिवार और मेरे परिवार का कोई सदस्य ऐसा नहीं होगा जो एक दूसरे से पारिवारिक सम्बन्ध नहीं रखता हो। राजनैतिक क्षेत्र के सम्बन्ध में मैं यह कह सकता हूं कि हिन्दुस्तान में बहुत कम ऐसे व्यक्ति होंगे जिन्होंने एक ही निर्वाचन क्षेत्र से सन् 1952 से लेकर अब तक लगातार चुनाव लड़ा हो और वहीं से चुनाव जीता हो। उन्होंने इस दृष्टि से अपना एक कीर्तिमान प्रस्तुत किया है।

जोशीजी साधारण परिवार के व्यक्ति थे। उनके बारे में कोई यह नहीं कह सकता कि वे सम्पन्न परिवार के थे और इस कारण से वे राजनीति में सफल हुए। लेकिन मेरा विश्वास है कि उस व्यक्ति ने राजनैतिक क्षेत्र में काम कर अपना कद ऊंचा करने का आदर्श उपस्थित किया है। राजा-महाराजाओं के युग में चाहे उम्र उनकी छोटी ही हो, किसी प्रकार का उन्हें काम करना पड़ा हो लेकिन उन्होंने संघर्ष किया। संघर्ष के दौरान उन्होंने कई प्रकार की यातनाएं भी सही हैं। उन यातनाओं का जिक्र जोशी जी से कभी हम आपस में बैठकर बात करते थे तो वे स्वयं कहते थे कि उन्हें किस प्रकार की परेशानियों से गुजरना पड़ा। मैं समझता हूं कि उन परेशानियों का अन्दाजा लगाने से भी आदमी थोड़ा भयभीत हो जाता है कि क्या इस सीमा तक के भी अत्याचार किसी व्यक्ति पर हो सकते हैं। उन अत्याचारों को सहा। उसके बाद में सक्रिय राजनीति में आये, विधायक बने और सुखाड़िया जी के मंत्रिमण्डल में पहली बार वे राजस्थान मंत्रिपरिषद् में लिये गये। उस समय मुझे याद है, जब वे राजस्थान के उद्योग मंत्री थे, उद्योगपतियों के साथ सम्पर्क बनाकर राजस्थान का औद्योगीकरण किस प्रकार से किया जाए, लगातार यह उनकी चिन्ता रहती थी। उस चिन्ता के साथ साथ वे इस बात का भी प्रयत्न कर रहे थे कि राजस्थान का विकास हो। विकास के लिये जो इन्फ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट हो उसमें राजस्थान की सरकार आगे किस प्रकार से बढ़ सके, उसकी भी उन्होंने व्यवस्था की। लेकिन प्रारम्भिक काल में उस व्यक्ति का सम्बन्ध ट्राइबल एरिया से था, ट्राइब्स से था। हमेशा उनके दिमाग में यह रहता था कि डूंगरपुर, बांसवाड़ा, उदयपुर का ट्राइबल एरिया, इसको जितनी भी जिस प्रकार से जैसे भी हो सुख-सुविधाएं पहुंचायी जायं, चाहे कानून में व्यवस्था की जाय, चाहे बजट में किसी प्रकार का अलोकेशन हो, जोशी जी को लगातार यह चिन्ता रही कि इस एरिया में बैकवर्डनेस—जो एरिया की बैकवर्डनेस है, ट्राइब्स की बैकवर्डनेस है इन दोनों को किस प्रकार से समाप्त किया जाय। मुझे याद है 1953 में, मैं सबसे पहले प्रतापगढ़ गया था और प्रतापगढ़ के बाद में बांसवाड़ा गया था। मैं कभी कल्पना ही नहीं कर सकता था कि आदिवासी एरिया क्या होता है, आदिवासी क्या है। हम राजस्थान के रहने वाले और खास तौर से सीकर जिले का रहने वाला मैं

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

आदिवासी क्षेत्र की कल्पना भी जो आदमी नहीं कर सके, वह आदमी जब प्रतापगढ़ और बांसवाड़ा गया, वहां निश्चित रूप से मैंने देखा कि आदिवासियों की किस प्रकार से स्थिति हैं।' मैं जोशी जी के पास ही ठहरा था। जोशी जी ने मुझे बताया कि यहां आदिवासियों की किस प्रकार की परम्पराएं हैं, चलन किस प्रकार के हैं, खेती-बाड़ी किस प्रकार से करते हैं, खाना-पीना उनका क्या है। इनको ऊपर बढ़ाना, उसके लिये जोशी जी कहा करते थे कि यह खुद ही एक समस्या है कि इनको किस प्रकार से शिक्षित किया जाय, किस प्रकार से इनको समझाया जाय कि आज के युग में आगे बढ़ने के कई प्रकार के रास्ते हैं। लेकिन जाने का साधन नहीं, बातचीत करने का साधन नहीं, सम्पर्क करने का साधन नहीं, पुराने रीति-रिवाजों से ऐसे बंधे हुए कि उन रीति-रिवाजों से उनको बाहर निकालना यह भी संभव नहीं। लेकिन मैं आज जिस व्यक्ति को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा हूं उस व्यक्ति ने भी अपने मन में यह संकल्प कर रखा था कि मैं आदिवासी क्षेत्रों में जितना भी हो सके काम कर सकूं और काम करके इस क्षेत्र का भी विकास करूं और साथ साथ यहां रहने वाले आदिवासियों को भी आगे बढ़ाने की कोशिश करूं। यह सब हम देख रहे हैं कि भोगीलाल जी पाण्ड्या, हरिदेव जी जोशी, इन सब लोगों ने मिलकर किस प्रकार से उस क्षेत्र को जमाया है। ऐसी स्थिति में वे आज हमारे बीच से न केवल एक विधायक के रूप में गये, एक नेता के रूप में गये, एक राजनैतिक क्षेत्र के प्रमुख व्यक्ति के रूप में गये लेकिन आदिवासी क्षेत्र के लिये उनकी बहुत बड़ी हानि हुई है जिसको हम कभी भूल नहीं सकते।

उपाध्यक्ष महोदय, आपको यह जानकारी होगी कि वे पत्रकार भी थे और पत्रकार के नाते भी उन्होंने राजस्थान में लोगों को जगाने का बहुत प्रयत्न किया है। पत्रकारिता जगत में उन्होंने जिस प्रकार का एक आदर्श उपस्थित करने की स्थितियां पैदा की थीं, हम उसको भूल नहीं सकते।

राजस्थान की विधान सभा में मुझे याद है कई बार ऐसे तीखे एक-दूसरे पर वाण प्रतिवाण चलते थे कि उससे लोग यह समझते थे कि इनके आपस में अब कभी बात नहीं हो सकती, इनके आपस में तो अब बोलचाल का रिश्ता ही पैदा नहीं हो सकता। लेकिन, मैंने एक बार सुखाड़ियाजी को श्रद्धांजलि अर्पित करते समय जैसे कहा था कि इस हाउस में सुखाड़िया जी ने इस प्रकार की परम्पराएं डाली थीं कि आप चाहे विधान सभा में कितनी ही कटु बात कह दें उस कटुता का असर राजनैतिक कवच पर ही था, व्यक्तिगत रूप में उसका असर नहीं हो सकता था, सुखाड़िया जी के बाद जोशी जी ने उसी प्रकार की परम्परा का निर्वहन किया है। आज उस स्थिति में मैं यह कह सकता हूं कि राजस्थान विधान सभा में इस प्रकार की परम्परा डालने में जहां सुखाड़िया जी का हाथ था, जोशी जी

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

ने भी उसी प्रकार से आचरण कर उन परम्पराओं को और ज्यादा मजबूत बनाने की कशिश की है।

आज इस स्थिति में, मुझे याद है, जिस समय राजस्थान विधान सभा में काश्तकारी कानून के सम्बन्ध में चर्चा हो रही थी, काश्तकारी कानून और बाकी के कानून जब बने थे और जिस समय भूमि की सीलिंग का कानून आया था, प्रथम बार श्री टीकारामजी पालीवाल ने राजस्थान में राजस्थान टीनेन्ट्स प्रोटेक्शन आर्डिनेंस जारी किया था। वह जारी किया था 1951 में। उसके बाद में 1952 में विधान सभा बनी और विधान सभा में, मुझे याद है पहला या दूसरा या तीसरा, वह आर्डिनेंस आया। वहां यह बहस थी कि इस आर्डिनेंस को बिल के रूप में कन्वर्ट किया जाये या आर्डिनेंस अपने आप में ही इफेक्टिव है। इसकी चर्चा वहां हो रही थी। खैर, यह कानूनी मुद्दा था और वह कानूनी मुद्दा निपट गया। लेकिन सबसे बड़ी डिबेट इस राजस्थान विधान सभा में यदि लैण्ड रिफर्म्स के प्रसंग में हुई है तो राजस्थान टीनेन्ट्स प्रोटेक्शन आर्डिनेंस के आधार पर हुई है। उस समय जोशी जी ने सारे उदयपुर डिवीजन का सारा चित्र प्रस्तुत किया कि इस कानून की आवश्यकता क्यों है। जिस कानून की आवश्यकता आज महसूस की जा रही है, यह जरूरी क्यों है? उसके ऊपर उन्होंने काश्तकारी कानून के सम्बन्ध में एक पूरा विचार अपने साथ रखा था। उस समय मुझे लगा कि काश्तकार के सम्बन्ध में, ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के सम्बन्ध में और आदिवासियों के भले के सम्बन्ध में भी उस व्यक्ति के दिमाग में सब प्रकार की भावनाएं थीं, एक ठोस कार्यक्रम था और उस कार्यक्रम को पूरा करने का मन में एक संकल्प बना हुआ था।

राजस्थान विधान सभा के पिछले चुनाव में वे कई बार बीमार रहे। उनके पार्किन्सन की डिजीज थी, हाथ कटने के बाद इस बीमारी ने थोड़ा-सा उनके मस्तिष्क के ऊपर भी असर किया। पिछले दिनों जब मैं डाक्टर ढोलकिया से मिला, डाक्टर ढोलकिया से कहा कि इनकी डिजीज का कारण क्या है। तो उन्होंने सब बताया कि हाथ के कारण से बॉडी का इम्बेलेंस हो गया है और इसी के कारण से यह डिजीज हुई है। मैंने जोशी जी को भी बताया, मैंने कहा कि जहां से हाथ कटा हुआ है, डाक्टर ढोलकिया का कहना है कि उतना ही वजन इस साइड में लटका लें। उस समय वे कहने लगे, भैरोंसिंहजी, मैं अब 73 वर्ष का हो गया, कितने वर्ष और जीऊंगा और कितने वर्ष के लिये मैं बोझ लटकाऊं, मुझे ज्यादा जीने की इच्छा नहीं है। मैं यह तो नहीं चाहता कि मेरी मौत आज आ जाये लेकिन मौत के लिये मैं अपनी जीवन पद्धति को बदलूं, इसकी मेरे लिये कोई आवश्यकता नहीं है। जिस समय अभी बीमार हुए, बम्बई में बीमार होकर गये। मुझे वह दिन भी याद है कि उनसे बोला नहीं जा रहा था। मैंने उनको बम्बई भेजा था। वे बोल नहीं सकते थे। बम्बई हॉस्पिटल में मुझसे कहा गया कि

Page No.5

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

जोशीजी बोल सकते हैं, अभी बोल नहीं रहे हैं लेकिन बोल सकते हैं। मैं हॉस्पिटल में गया, वे सो रहे थे, मैंने जोर से उनके कान में आवाज लगाई कि जोशीजी मैं भैरोंसिंह बोल रहा हूं। आप शायद मानेंगे या नहीं मानेंगे लेकिन सारे डाक्टर्स वहां थे, ज्योंहि मैंने जोर से उनके कान में कहा तो सबसे पहले उन्होंने हाथ उठाया हाथ मिलाने के लिये, और फिर धीरे-धीरे आंखें खुलीं। आंखें खुली तो उनके परिवार के लोग भी थे, हम भी सब लोग थे, डाक्टर्स भी थे और आंखें खुलते ही ऐसा लगा कि उनमें वापस कुछ सोचने की शक्ति पैदा हुई है। फिर बाद में मुझे कहने लगे कि अब तो मैं ठीक हो गया हूं। दो दिन बाद में, मैं फिर मिला तो कहने लगे, मुझे व्हील चेयर पर बिठाकर घुमाओ। मैंने कहा, घुमाने का काम मैं नहीं करूंगा। जब डॉक्टर एडवाइज करेगा कि आपको बिस्तर से उठने की इजाजत है या नहीं है उसी समय मैं आपसे बातचीत करूंगा।

इन बातों को देखकर मुझे ऐसा लगता है कि एक ऐसा साथी यहां से उठकर गया है जिसके दिमाग में राजस्थान के लिये चिन्ता रहती थी। राजनैतिक क्षेत्र में चाहे कितना ही काम करें, राजनैतिक क्षेत्र में काम करते यदि कटुता पैदा हो गयी तो मैं समझता हूं कि लोग राजनीति को समझते नहीं हैं या राजनीति को एक इस रूप में लेते हैं जिसका वास्तविकता से कोई लेना देना नहीं है। राजस्थान में इस प्रकार की पीढ़ी जिसने राजनीति को शुद्ध बनाने की कोशिश की, जिसने राजनैतिक आधार पर आचरण को बहुत महत्व दिया, राजनीति के आधार पर जिन लोगों ने राजस्थान में एकात्मकता का भाव पैदा किया, आज उस प्रकार का व्यक्ति हमारे बीच से उठ गया। मुझे तो इसका बहुत अफसोस है। मैं सोचता हूं सदन को भी पूरा अफसोस होगा। हम कुछ कर नहीं सकते सिवाय इसके कि हम उनको श्रद्धांजलि अर्पित करें। वह श्रद्धांजलि मैं मेरी ओर से, मेरी पार्टी की ओर से और सदन की ओर से प्रस्तुत करता हूं। साथ ही उनके बच्चों के लिये मैं भगवान से यही प्रार्थना करता हूं कि उनका साया उनके ऊपर से उठ गया, उनको इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे और उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहूंगा, बाकी ज्यादा कुछ कहना उचित नहीं समझता हूं।

श्री परसराम मदेरणा (नेता, प्रतिपक्ष) : माननीय उपाध्यक्षजी, सदन के नेता ने शोकाभिव्यक्ति और श्रद्धांजलि का जो प्रस्ताव रखा है मैं उसका समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। यह हमारे लिये बहुत वेदना और दुःख की बात है। हमारी विधान सभा में प्रारम्भ से, 1952 के लोकतांत्रिक चुनावों के बाद से निरन्तर जो व्यक्ति इस सदन के सदस्य रहे, यह अपने आप में कीर्तिमान ही नहीं वरन् इस बात का द्योतक है कि जनता में और

(श्री परसराम मदेरणा)

मतदाताओं में कितनी अगाध श्रद्धा और आस्था उनके प्रति थी।

उपाध्यक्षजी, जोशीजी एक बहुत सामान्य परिवार में पैदा हुए। उनका जीवन संघर्षमय जीवन रहा। स्वतन्त्रता संग्राम के वक्त लुक-छिपकर के उन्होंने प्रजा परिषद के आन्दोलन को चलाया। वे जेल में भी गये। लेकिन उपाध्यक्ष महोदय, सबसे बड़ी बात है कि सार्वजनिक, राजनीतिक और हमारे राजस्थान के जीवन में उनका योगदान रहा है। एक सामान्य घर पैदा हुए व्यक्ति इस सदन के भी लगातार दस बार सदस्य ही नहीं वरन् राजस्थान के मुख्य मंत्री भी रहे और राजस्थान के तीन मंत्रिमण्डलों के अन्दर सदस्य भी रहे। लेकिन उनका जो हमेशा कार्य-क्षेत्र रहा, जैसा कि अभी मुख्य मंत्रीजी कह रहे थे, आदिवासियों और वहां के पिछड़े-वर्ग के सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक उत्थान के लिये उनका सबसे बड़ा योगदान रहा है। इस एक बिंदु के ऊपर उनको पिछड़े हुए लोग, गरीब लोग, आदिवासी और शोषित थे वे हमेशा याद करते रहेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय, जोशीजी को कई क्षेत्रों में काम करने का अवसर मिला। बहुत छोटी आयु के अन्दर राजस्थान का विलय हुआ, उसके पहले वे प्रजा मण्डल के प्रतिनिधि रहे अखिल भारतीय स्टेट पीपुल्स कांफ्रेंस में। फिर उसके बाद में पी. सी. सी. के मेम्बर हुए, ए. आई. सी. सी. के सदस्य भी रहे और हमारे सदन की कई कमेटियों के अध्यक्ष रहे। इस विधान सभा में नयी परम्पराएं स्थापित करने में उनका बहुत बड़ा हाथ रहा है।

उपाध्यक्ष महोदय, जोशीजी के निधन से आज पीढ़ी की पंक्ति में और उस शृंखला में हमने एक ऐसा आदमी खो दिया है जो स्वतंत्रता संग्राम का एक महान नेता था। उन्हें अपने जीवन से बहुत सामान्य वर्ग के लोगों को जन-सेवा में प्रेरित करने में, उत्प्रेरित करने में भी हमेशा याद किया जाएगा। वे कई संस्थाओं के अध्यक्ष रहे, जिनका सम्बन्ध आदिवासियों से रहा है, हरिजन कल्याण से रहा है, उसके वे सदस्य रहे और जीवन-पर्यन्त वे उनमें काम करते रहे। राजस्थान के विकास का जब इतिहास लिखा जायेगा, जोशीजी के उस इतिहास के अन्दर कई चेप्टर होंगे।

राजस्थान जैसा राज्य देशी राज्यों से बना। उस समय कितना पिछड़ापन था! पिछड़ेपन के बाद में यहां की जनता का जबरदस्त शोषण था, उस शोषण में से मुक्ति दिलाने के लिये जैसाकि अभी सदन के नेता कह रहे थे, उनकी अग्रणी भूमिका थी। वे हमेशा आदिवासियों के बीच ऊपर पहाड़ों पर घूमते रहते थे जिस तरह उन्होंने मुख्य मंत्रीजी को कई बातें बतायीं, मुझे भी कह रहे थे कि कई दिनों तक लगातार मैं पहाड़ों के अन्दर झोंपड़ियों में रहता था। एक झोंपड़े के अलावा इनके पास कोई चीज नहीं है। उन लोगों के उत्थान की बात सोचकर के स्वतंत्रता संग्राम के अन्दर जिस आदमी ने पदार्पण किया, आप निश्चित तौर पर सोच सकते हैं कि उन्होंने

(श्री परसराम मदेरणा)

अपने जीवन का क्या लक्ष्य बनाया। आज गरीब की, अंतिम आदमी की बात करते हैं तो अगर कोई भी अन्तिम आदमी यदि आज राजस्थान में है तो आदिवासी लोग जो राजस्थान में है, वह अन्तिम व्यक्ति है। आज भी उनकी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर है, उनके शैक्षणिक उत्थान के लिए, उनके सामाजिक उत्थान के लिए, उनके आर्थिक उत्थान के लिए, उन्होंने जो कार्य किया, वह हमेशा राजस्थान की जनता में और हमारी विधान सभा के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण रहेगा।

उपाध्यक्ष महोदय, जोशीजी पी.सी.सी. के सदस्य ही नहीं, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री ही नहीं, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य ही नहीं, प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष ही नहीं, उसके अलावा भी वे एक नेता थे और हमारे यहां के सार्वजनिक और राजनैतिक जीवन में काम करने वाले राजनैतिक दलों के लोग उनके जीवन से प्रेरणा लेते थे। वे एक लम्बी बीमारी तक मौत से जूझते रहे। जूझना इस बात का द्योतक है कि वे प्रबल आत्मबल वाले व्यक्ति थे। मुझे अच्छी तरह से मालूम है, मुझे कई दफा उनके साथ जाने का अवसर मिला। वे प्रातः काल तीन-साढ़े तीन बजे उठ जाया करते थे और करीबन दो घण्टे तक वे स्वाध्याय करते थे, जोर-जोर से पूजा करते थे। वे धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। जो व्यक्ति धार्मिक प्रवृत्ति का होता है उसका आत्मबल बहुत प्रबल हो जाता है और इसीलिए, लम्बे अर्से तक बीमार रहने के बाद में भी वे मौत से जूझते रहे। यह उनकी विल पावर थी, उनका आत्मबल था जिसमें बराबर भयंकर बीमारी के होते हुए भी वे संघर्ष करते रहे। उन्होंने एक कार्यकर्ता से अपना जीवन प्रारम्भ किया और शनैः शनैः वे एक के बाद एक चरण में राजस्थान की राजनीति के अन्दर कई स्थानों पर केन्द्र बिन्दु रहे, एक साल नहीं कई दशाब्दियों तक केन्द्र बिन्दु रहे। वे एक व्यक्ति थे जिसका योगदान इस विधान सभा में भी बहुत अद्वितीय रहा है। वे रूल्स कमेटी के मैम्बर भी थे। सदन के नेता जानते हैं, वे जन लेखा समिति के सदस्य भी थे। आज की तरह जन लेखा समिति नहीं चलती थी, 11 बजे से लेकर 5 बजे शाम तक लगातार जन लेखा समिति बैठती थी। जिस तरह से उन्होंने अपने जीवन में ज्ञान प्राप्त किया था और वित्तीय मामलों के अन्दर गहरा अध्ययन किया था उसको देखकर के उनके प्रश्नों के पूछते वक्त मुझे ऐसी अनुभूति होती थी कि उनकी इस पर बहुत बड़ी गहरी पकड़ है। जैसा कि अभी सदन के नेता कह रहे थे कि उन्होंने, चाहे सदन में कितनी भी उत्तेजना रही हो, सदन में कितनी भी गर्मागर्मी रही हो लेकिन उसके बाद भी अपने स्वभाव से, अपने चरित्र से, अपनी मान्यताओं के बल पर और अपनी परम्पराओं को ध्यान में रखकर हमेशा जो सौहार्द और भाईचारा रखा और भाईचारे के साथ में एक मित्रता का व्यवहार रखा वह अपने आप में इस सदन की परम्पराओं की आधार-शिला मजबूत करने वाला नींव का पत्थर था।

(श्री परसराम मदेरणा)

उपाध्यक्ष महोदय, आज उनके निधन से राजस्थान के अन्दर एक बहुत रिक्तता आयी है। राजस्थान में ही रिक्तता नहीं वरन् उस आदिवासी इलाके के अन्दर आज सबसे बड़ी वेदना अगर किसी को है, तो उस इलाके के उन गरीब लोगों को है जो अन्तिम व्यक्ति हैं। वे जानते हैं कि प्रारम्भ से लेकर जो आदमी 50 साल तक हमारे बीच में हमारी सेवारत रहा, वह व्यक्ति हमारे बीच में से उठ गया है। विधान सभा में हमारा यह दुर्भाग्य है कि अब विधान सभा के सबसे प्रथम विधायक कोई भी व्यक्ति यहां नहीं जो दस विधान सभा से इस सदन का सदस्य हो— वे हमारे बीच में सदन में नहीं रहे। मेरे लिए व्यक्तिशः भी यह बहुत बड़ी वेदना और दुःख है। जैसा कि प्रस्ताव मुख्य मंत्रीजी ने रखा है, मैं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से, उनकी दिवंगत आत्मा को भगवान चिर शांति प्रदान करे, इसकी प्रार्थना करता हूं साथ ही उनके शोक संतप्त परिवार को इस बिछोह और क्षति को सहन करने के लिए भगवान शक्ति दे, ऐसी प्रार्थना करता हूं।

श्री फतेह सिंह (कुशलगढ़) : उपाध्यक्ष महोदय, आज हम सदन में एक ऐसे व्यक्ति को श्रद्धांजलि अर्पित करने जा रहे हैं जिसके बारे में सदन के नेता ने, विपक्ष के नेता ने भी एक प्रस्ताव रखा। मैं इस मौके पर यह कहना चाहूंगा कि हरिदेव जोशी बांसवाड़ा जिले के निवासी थे और मैं भी उसी जिले का एक विधान सभा में सदस्य चुनकर आया हूं। मैं जानता हूं कि जोशीजी राजनीति में शुरू से उस इलाके में काम करते रहे। वे जहां पार्टी के कई पदों पर भी रहे वहीं सरकारी पदों पर मुख्य मंत्री भी रहे, मंत्री भी रहे और राज्यपाल भी रहे। लेकिन, मैं इतना जरूर कहना चाहूंगा कि वह व्यक्ति एक ऐसे परिवार में से था जो खांदू गांव आदिवासी इलाके में पड़ता है जो माही डैम बनने से डूब में आया। मैंने जन्म बाद में लिया होगा लेकिन मैं जानता हूं कि वहां उस आदिवासी इलाके में घूम फिरकर उन्होंने काफी काम किया है। आदिवासी इलाकों में जहां कहीं भी शादियां होतीं, मौत-मरण होता या और भी कई तरह के कार्यक्रम होते तो गरीब से गरीब परिवार के घर भी वे ऐसे कार्यक्रमों में गये हैं और उन्होंने काफी उस इलाके में आदिवासियों के प्रति काम किया है। सरकार में रहते या दल में रहते हुए उन्होंने किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रखी।

आज भी वहां के आदिवासी लोग यह जानते हैं कि बांसवाड़ा जिले में जो भी विकास हुआ है, वह जोशीजी की वजह से हुआ है, यहां तक कि माही डैम बनने से बांसवाड़ा का आधा जिला, जहां वहां के आदिवासी लोग रहते हैं, जीवित हुआ है। उस डैम से लोगों का यह मानना भी है कि जोशीजी की खातिर ही बांसवाड़ा जिले का विकास हुआ है। तो वे व्यक्ति, एक ऐसे व्यक्ति थे कि गरीबों के प्रति उनमें जगह थी, काम करने की लगन थी, चिन्तन था। उन्होंने काफी काम किया भी हैं। वैसे बांसवाड़ा के अलावा पूरे प्रदेश में, पूरे राजस्थान में या मध्य-प्रदेश का

Page No.9

(श्री फतेह सिंह)

क्षेत्र हो या गुजरात का क्षेत्र हो वहां भी जाकर के वे आदिवासी बैल्ट में काम करते थे ।

उनका लम्बी पीड़ा के बाद आज निधन हुआ, उसके लिये हम बांसवाड़ा जिले के लोगों को काफी दुःख है। प्रदेश के सभी मानवों को भी दुःख है कि इतनी बड़ी क्षति हुई है। मैं इस मौके पर यह कहना चाहूंगा कि उन्होंने राजनीति में रहकर और पदों पर रहकर जो काम किया है, हम उनके कामों की तुलना में वही कहेंगे कि उनके काम के आधार पर अगर हम उनके गुणों के आधार पर श्रद्धांजलि अर्पित करें, उनके रास्ते पर चलकर उनके गुणों को मानें, वह हमारी उनके लिये सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मैं ईश्वर से यह प्रार्थना करूंगा कि उनकी आत्मा को शांति दे, उनके परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति दे, जय हिन्द ।

श्री चन्दनमल बैद (तारानगर) : आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, आदरणीय हरिदेवजी जोशी उस पीढ़ी के एक महत्वपूर्ण सदस्य थे, जिस पीढ़ी ने देश की आजादी के लिये लड़ाई लड़ी, संघर्ष किया, तकलीफें सहीं, बलिदान किया । सारी तकलीफें सहकर भी, सारी परेशानियां उठाकर भी, तन-मन-धन की हानि स्वीकार करके भी अपने पथ पर अड़े रहे, डटे रहे और देश को आजादी दिलायी। इतना ही नहीं उस पीढ़ी ने, जिस पीढ़ी का मैं जिक्र कर रहा हूं इन सब सारी चीजों के बाद देश के विकास, देश की समृद्धि, देश को आगे बढ़ाने के लिये जीवनभर अथक परिश्रम किया उस पीढ़ी के वे एक सदस्य थे। यह पीढ़ी धीरे-धीरे नहीं, अब तेजी के साथ लुप्त होती जा रही है । यह हमारे देशवासियों के लिये बड़े दुःख की बात है जोशीजी इस वास्ते महत्वपूर्ण नहीं थे कि वे इस विधान सभा के सदस्य थे, इस वास्ते भी महत्वपूर्ण नहीं थे कि वे कांग्रेस के सदस्य थे, पी.सी.सी. के सदस्य थे या ए.आई.सी.सी. के सदस्य थे, हमारे मुख्य मंत्री थे या कांग्रेस के प्रेसिडेंट थे बल्कि इस वास्ते महत्वपूर्ण थे कि एक संवेदनशील राजनीति के साथ-साथ पूर्ण रूप से उनका सारा जीवन एक सार्वजनिक जीवन था। सार्वजनिक के अलावा उनके जीवन में कोई भी स्थान नहीं था।

ऐसे महान व्यक्ति के चले जाने से इस प्रदेश की, इस देश की जो महान क्षति हुई है, मैं समझता हूं कि वह पूरी होने वाली नहीं है । हम बड़े भारी हृदय के साथ, दुःखी मन से आज उनको श्रद्धांजलि दे रहे हैं, इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

श्री अमराराम (धोद) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सदन के नेता द्वारा शोकाभिव्यक्ति और श्रद्धांजलि का जो प्रस्ताव हमारे पूर्व मुख्य मंत्री और इस विधान सभा के वरिष्ठतम सदस्य हरिदेवजी जोशी के बारे में रखा गया है और जो विचार प्रतिपक्ष के नेता और जनता दल के नेता ने व्यक्त किये हैं उसका मैं समर्थन करता हूं । इस महापुरुष ने इस राजस्थान के सार्वजनिक विकास में, सार्वजनिक जीवन में अभूतपूर्व योगदान दिया है, जिनका आज

(श्री अमराराम)

लम्बी बीमारी के बाद देहावसान हुआ है। उसके कारण राजस्थान के सार्वजनिक जीवन में जो रिक्तता आयी है, उसकी पूर्ति करना बहुत कठिन कार्य है।

इसीलिये मैं उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ, उनके परिवार को जो उनके देहावसान से दुःख हुआ है, शोक हुआ है, उसको झेलने के लिये प्रकृति से आशा करता हूं कि उनको क्षमता दे और जो सार्वजनिक जीवन में राजस्थान में रिक्तता आयी है उसकी पूर्ति के लिए प्रयास करे। मैं उनको पुनः श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री शिवनाथ सिंह (गुढ़ा) : उपाध्यक्ष महोदय, जोशीजी हमारे बीच नहीं रहे, बहुत बड़ी पीड़ा हम सबको है। जोशीजी से इस सदन के अनेक सदस्य बहुत लम्बे अरसे से जानकार हैं, मिलते-जुलते रहे हैं, उनके साथ काम करने का अवसर मिला है। जोशीजी काफी लम्बी बीमारी के बाद हमसे बिछुड़ गये। पिछले साल-डेढ़ साल का समय ऐसा रहा, जब हमको यह लगता था कि जोशीजी कभी भी जा सकते हैं लेकिन जब वह घड़ी आयी बहुत पीडादायक समाचार लेकर हमारे सामने आयी। वे आत्मबल के धनी थे, उनकी आत्मा में शक्ति थी और उसी शक्ति की वजह से इस लम्बी बीमारी के संघर्ष में वे जूझते रहे। आखिर प्रकृति ने जीत पायी और भगवान ने उन्हें हमसे छीन लिया।

जोशीजी का जीवन एक सार्वजनिक कार्यकर्ता के हिसाब से बहुत लम्बा जीवन रहा। अपने यौवन-काल से ही कहिये, वे सार्वजनिक जीवन में आ गये और लगातार संघर्ष करते रहे। वे स्वाभिमान के धनी थे। एक बार वे किस्सा सुना रहे थे। एक डेपुटेशन के लिये वे राजा से मिलने गये। और लोग साथ थे। राजा के सामने जब गये तो वहां सिर्फ राजा बैठा था और सामने कोई कुर्सी नहीं थी। जोशीजी बिना एक शब्द कहे कि मैं इस अपमान को नहीं सह सकता, वापस आ गये। यह आजादी से पहले के समय की बात है। इस प्रकार के स्वाभिमानी व्यक्ति राजस्थान को मिले, यह राजस्थान का सौभाग्य था। जोशीजी राजनेता थे, मुख्य मंत्री रहे, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे, महामंत्री रहे लेकिन वे सबके थे, आम कार्यकर्ता ऐसा महसूस करता था। जब उनके पास काम के लिए कोई जाता था, उसे यह महसूस होता था कि मेरे अलावा जोशीजी के प्रिय कोई है ही नहीं। हर व्यक्ति यह महसूस करता था कि जोशीजी मेरे हैं। जब वे मुख्य मंत्री रहे, कोई भी पार्टी के सदस्य उनके पास गये, उनको प्रेम से जोशीजी ने विदा किया और किसी ने यह महसूस नहीं किया कि हम विपक्ष के सदस्य हैं, हम उनको पार्टी के सदस्य हैं और कोई भेदभाव हुआ हो। इस प्रकार के जोशीजी थे। वे लम्बे समय तक सार्वजनिक जीवन में रहे। मैं यह विश्वास करता हूं और निवेदन करना चाहूंगा कि वे ऐसे व्यक्ति थे जो राजस्थान के हर जिले के मुख्य कार्यकर्ता को, हर तहसील के मुख्य कार्यकर्ता को नाम और शक्ल से जानते थे। ऐसे बहुत कम राजनेता हैं जो इस प्रकार की जान-पहचान रखते हों। जब उनसे मिलना होता, कांग्रेस के

(श्री शिवनाथ सिंह)

के ही नहीं, विपक्ष के भी कई व्यक्ति जो हुआ करते थे, वे पूछते थे उनका हाल कैसा है उनका हाल कैसा है और यह महसूस होता था कि जैसे जोशीजी हमारे परिवार के सदस्य हैं।

आज वे हमारे बीच नहीं रहे। जोशीजी का इस राजस्थान के निर्माण में बहुत बड़ा योगदान रहा है। वे उस पीढ़ी के व्यक्ति थे, जिसके सामने सिर्फ एक ही लक्ष्य था या कि राजस्थान का निर्माण किया जाय, राजस्थान का विकास किया जाय। और इस मामले में वे लगातार जुटे रहे। आखिरी क्षण तक वे राजस्थान के विकास की चिन्ता किया करते थे। भगवान ने ऐसी विभूति को हम से छीन लिया, पीड़ा की बात है। इस अवसर पर हम सब उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। धन्यवाद।

श्री भीखा भाई (सागवाड़ा) : उपाध्यक्ष महोदय, सदन के नेता माननीय मुख्य मंत्री जी ने शोकाभिव्यक्ति के दौरान जो विचार प्रकट किये हैं और उनके साथ-साथ हमारी पार्टी के नेता परसरामजी मदेरणा, चन्दन मलजी और दूसरे सदन के सदस्यों ने जो शोकाभिव्यक्ति की है उसका मैं समर्थन करता हूं।

मैं स्वयं उस स्थान से आता हूं और जोशीजी मेरे एक साथी थे। वे साथी आज नहीं रहे, मुझे तो अभी ही मालूम हुआ। मुझे पता नहीं था, एकाएक मुझे तो अभी ही मालम हुआ, मुझे तो स्वयं मालूम नहीं था। यह स्वाभाविक है जब एक साथ काम करने वाले लोगों के साथ इस प्रकार की घटना असमय ही घट जाय। वे मेरे छोटे थे, मैं उम्र में उनसे बड़ा था, काम-काज भी पहले करता था, इसलिये स्वाभाविक रूप से जब छोटा भाई चला जाता है तब बहुत दुःख होता है। आज डूंगरपुर-बांसवाड़ा को देखने वाला कोई आदमी नहीं रहा, ऐसा लगता है। मेरी उम्र ज्यादा है और आने वाली पीढ़ी में मुझे कोई नहीं दिखता।

जोशीजी के बारे में सदन में जो विचार व्यक्त किये गये हैं उससे भी बड़ी बात मैं यह कहना चाहता था कि वे एक साधारण घर में जन्मे, जैसा कि अभी बताया, खान्दू गांव में उनका जन्म हुआ था। उनके पिताजी साधारण व्यक्ति थे। ज्योतिष का धन्धा करते थे, अनाथालय चलाते थे। कुशाग्र बुद्धि होने के साथ-साथ हिम्मत के धनी भी थे इसलिये संघर्ष करने की उनकी प्रवृत्ति थी, संघर्षशील उनका जीवन था, ऐसा मैं कह सकता हूं।

प्रारम्भ में जोशीजी ने देशी रजवाड़ों खास तौर पर डूंगरपुर के अन्दर प्रजामण्डल के वक्त में बड़ा जोरदार काम किया। हमारे नेता थे–हम लोग कई नेता थे लेकिन जो काम जोशीजी ने किया वह काम मैं समझता हूं दूसरा कोई आदमी नहीं कर सकता था। स्वतन्त्रता के बाद में अनेक रचनात्मक कार्य किये। उसके पहले राजस्थान सेवा संघ के माध्यम से वे अध्यापन का कार्य करते थे और कई कठिन जगलों के अन्दर रह कर उन्होंने आदिवासियों की जो सेवा की उसको भूला नहीं जा सकता।

(श्री भीखा भाई)

उनकी आदत थी कि जैसा कि आप सब लोग जानते हैं, सब के साथ अच्छा व्यवहार करना, गरीबों के साथ उनकी झोंपड़ी में जाना और निरन्तर उनकी सेवा के काम करना। उसका द्योतक है कि 1952 से लेकर आज तक वे विधान सभा के सदस्य चुनते चले आ रहे हैं। यह सेवा का ही फल है। उन्होंने राजाओं और राज्य की सामन्ती व्यवस्थाओं के खिलाफ एक जेहाद बोला। मुझे याद है कमला कांड, कुआं कांड, कई कांडों के अन्दर उन पर आक्रमण हुए लेकिन उन्होंने हिम्मत के साथ बरदाश्त किया और हिम्मत के साथ किया। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य ही नहीं, प्रान्त के अखिल भारतीय स्तर पर हमारे कांग्रेस के अधिवेशन किये जिसमें दो-दो बार वे अध्यक्ष रहे और उन्होंने हमारी कांग्रेस की संस्था को बहुत मजबूत किया। तीन चार मुख्य मंत्री रहे, मंत्रि-मण्डल के लगातार वर्षों तक सदस्य रहे और साथ ही साथ गवर्नर रहे। लेकिन गवर्नर बनने के बाद मुझे बराबर यह कहते थे कि, भीखा भाई, मुझे तो यह अच्छा नहीं लग रहा है, मैं इस काम को छोड़ देना चाहता हूं मुझे तो सेवा के काम में ही लगना चाहिए। कई बार जिन्दगी में ऐसी समस्याएं होती थीं उसके अन्दर हिम्मत के साथ, हौसले के साथ एक-दूसरे से मिल कर हम अपनी बात करते थे आज वे हमारे बीच में नहीं रहे, इसका सारे सदन को दुःख है, शोक है। ऐसा लगता है कि जैसे कोई सितारा या कोई सूर्य खतम हो गया है। ऐसा अन्धकार हमारे लिए लग रहा है।

बागड़ की सेवाएं जो उन्होंने की–डूंगरपुर-बांसवाड़ा को मानते हुए–उनको भूला नहीं जा सकता। आदिवासियों की की सेवा की। राजनीतिक दृष्टि से, सामाजिक दृष्टि से, शिक्षा की दृष्टि से, औद्योगिक दृष्टि से–हर दृष्टि से उन्होंने आदिवासी क्षेत्रों का विकास किया। विकास के समय उनके मन में हमेशा यही रहा, मुझे कहते रहते थे कि तुम माही उप नहर के लिए झगड़ा क्यों नहीं करते? भैरोंसिंहजी से झगड़ा करो और नहर लाओ। मैंने तो जूते तोड़े हैं, मैं जूते तोड़कर माही लाया, आप माही की नहर क्यों नहीं कम्प्लीट करो! यह बारबार कहा करते थे। उनकी इस प्रकार की भावना हमेशा-हमेशा स्मरणीय रहेगी। जहां हम उनकी दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं वहीं साथ ही साथ मैं यह कहना चाहता हूं कि उनका नाम सदैव बागड़ और राजस्थान के चित्रपट पर बना रहेगा, अमर रहेगा।

मैं अपनी ओर से उनके परिवार को, मैं भी परिवार का आदमी हूं और इसलिये मैं अपने आप यह महसूस करता कि हम सब लोग एक दुःख संतप्त परिवार के लोग हैं हमको भगवान शक्ति दे और सम्बल दे। इसके साथ ही उनके परिवार को जो भी शक्ति दे, उनके रिश्तेदारों को, उनके मित्रों को, सभी को भगवान शक्ति दे। मैं दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, भगवान हमे वह शक्ति दे कि हम उनका अनुकरण करें और उनके

Page No.13

(श्री भीखा भाई)

अधूरे काम हैं उनको पूर्ण कर सकें। यही श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री रामपाल उपाध्याय (सहाड़ा) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज राजस्थान ने ही नहीं बल्कि देश ने एक ऐसा सपूत खो दिया है जिसको कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। वाणी की मधुरता और संकल्पों की सुदृढ़ता का कोई प्रतीक राजनेता दिखता है तो वह हरिदेव जोशी जी थे। एक जीवन्त लोकतंत्र के प्रतीक थे। राजस्थान के कण-कण से उनका वास्ता था। उनका केवल एक उद्देश्य था, न तन सेवा, न मन सेवा, न धन सेवा और कुछ सेवा मुझे है इष्ट जन सेवा सदा सच्ची वन सेवा। आदरणीय जोशीजी साहब जब बीमार थे तब हम लोग मिला करते थे, उनके मन में आज भी सामन्तवादी प्रवृत्तियों के खिलाफ जो एक संघर्ष की कशमकश, जद्दोजहद थी, वह उनके प्रत्येक कार्य में देखने को मिलती थी। सचमुच आज ऐसा लगता है कि हमारे पिता नहीं रहे। आज मैं यह महसूस करता हूं कि हम को राजनीति की दिशाबोध देने वाला एक महान प्रतीक नहीं रहा। आज जो भी व्यक्ति सोचेगा हरिदेव जोशीजी एक ठिगना कद, मुसकराता चेहरा, गम्भीर भावभंगिमा, कार्य को पटुता और दरिद्र-नारायण के आंसुओं को पोंछने वाली एक महान आत्मा इस परिदृश्य से हट गयी है। मैं बोल नहीं पा रहा हूं। कल रात को मैंने उनके घर टेलीफोन किया था कि उनका स्वास्थ्य कैसा है। मालूम हुआ कि अभी एक महीना वहां रहना पड़ेगा। मुझे क्या पता था, विधि की विडम्बना कैसी है कि आज सवेरे आते ही हम को यह सुनने को मिला। और मुझे क्या पता था कि आज हमको एक महान सपूत के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करनी पड़ेगी।

मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि जहां उनकी आत्मा को शांति मिले वहां हम सब लोग, सार्वजनिक कार्यकर्ता जितने भी, चाहे इधर के हों या उधर के हों, हम लोगों को सार्वजनिक कार्य के प्रति वह तड़प, वह लगन, वह शक्ति, वह दूरदृष्टि प्राप्त हो जिससे हम राजस्थान को आगे बढ़ाएं। परमात्मा उनकी आत्मा को शांति दे और उनके परिजनों को इस असह्य दुःख को झेलने की शक्ति दे। न केवल परिजनों को बल्कि हम सब परिजनों को, राजस्थान के सभी सार्वजनिक को यह शक्ति दे। इसी के साथ मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री रतनलाल ताम्बी (जहाजपुर) : माननीय सदन के नेता महोदय, प्रतिपक्ष के नेता महोदय, अन्य दलों के नेतागण और सदस्य महानुभाव, आधुनिक राजस्थान के निर्माताओं में हरिदेव जोशी का नाम इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में सदा-सदा याद रहेगा। 1953–54 से मेरा उनका सम्बन्ध रहा है। राजस्थान में विमुक्त जाति संयुक्त संघ के वे जब महामंत्री थे तब प्रतिमाह हमारे गांव में आया करते थे। तब से उनसे लगातार सम्पर्क रहा, नवयुग दैनिक के जरिये भी सम्पर्क रहा। उस व्यक्ति की लगन, निष्ठा और गरीबों

(श्री रतनलाल ताम्बी)

के प्रति उत्थान की भावना, सार्वजनिक जीवन में हमेशा प्रेरणा देने वाली रही है। जब-जब भी उनसे मिलते थे—समस्याओं के समाधान के लिये या अन्य विकास के कार्यों के लिये, तो कभी निराश नहीं लौटते। वे हमेशा आदिवासी, गरीब, समाज में सर्वहारा तबका, कंजर-सांसी लें, बावरी लें, भील लें, उनके प्रति संवेदनशील रहे। मैं समझता हूं, आज उनका देहावसान राजस्थान के सार्वजनिक जीवन में अपूरणीय क्षति है।

आज राजस्थान के निर्माण की पृष्ठभूमि में हम जायें तो उनकी सेवाओं उनके काम को भुलाया नहीं जा सकता। राजस्थान के कोने-कोने में, गांव-गांव में इस व्यक्ति के नाम से और काम से सब लोग परिचित हैं। मैं इस अवसर पर उनके शोक-संतप्त परिवार को इस वज्रपात को सहने की शक्ति की परमपिता से प्रार्थना करता हूं। सार्वजनिक जीवन में अपूरणीय क्षति हुई है उसके लिये परमात्मा हम सबको शक्ति दे। उनके सपनों का राजस्थान बनाने में, उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने में, उनकी तरह का सार्वजनिक जीवन और परम्पराएं स्थापित करने में हम सबको परमात्मा शक्ति और प्रेरणा दे।

श्री पूंजालाल (राज्य मंत्री, सिंचाई) : सदन के नेता माननीय मुख्य मंत्रीजी, प्रतिपक्ष के नेता, कांग्रेस के अन्य माननीय सदस्यों, जनता दल के नेता एवं निर्दलीय सदस्यों ने माननीय जोशीजी के प्रति जो श्रद्धांजलि प्रस्ताव पेश किया है और उसका समर्थन किया है, उनके बारे में, उनके जीवन के बारे में, उनके गुणों के बारे में जो वर्णन किया है, मैं भी अपने आपको उसमें जोड़ते हुये यह समर्थन करता हूं कि वास्तव में वे प्रारम्भ से ही बांसवाड़ा की आदिवासी और गरीब जनता के लिये पथ-प्रदर्शक और शुभचिंतक के रूप में कार्य करते रहे। मैं भी इस अवसर पर अपनी ओर से उस जिले का निवासी होने के नाते श्रद्धांजलि दिये बगैर नहीं रह सकता। उस समय जब आवागमन के साधन और सड़कें भी नहीं थीं, तब से छोटे-छोटे गांवों में आदिवासियों के बीच में जाकर वे उनसे मिलते थे, बात करते थे, उनकी समस्याओं सुनते थे। वास्तव में जनता को प्रिय नेता के रूप में और अपने घर के व्यक्ति के रूप में महसूस होता था। मैं खुद उनसे 1981–82 में जब पंचायती राज के चुनाव हुए थे उस समय उनकी इष्ट देवी त्रिपुरा सुन्दरी के मंदिर में प्रमुख उम्मीदवार के चयन के समय मिला था क्योंकि उस समय मैंने पहली बार निर्दलीय के रूप में प्रधान का चुनाव लड़ा था। उस समय मेरी मुलाकात उनसे व्यक्ति रूप से हुई थी। उन्होंने मुझसे हाथ मिलाकर मुझे धन्यवाद भी दिया था और इस तरह से आगे बढ़ने की प्रेरणा उनसे ही ली है। मैं यह समझता हूं।

मैं भी भारी मन से उनके प्रति इस अवसर पर सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये भगवान से यही प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और रिक्तता इस प्रदेश और बांसवाड़ा जिले

Page No.15

(श्री पूनमचन्द)

में आयी है, उसकी पूर्ति भगवान करे और उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। जय हिन्द।

श्री गुलाबसिंह शक्तावत (वल्लभ नगर) : उपाध्यक्ष महोदय, आज जब सुबह यह समाचार मिला तो मन में यह विश्वास नहीं हुआ कि दक्षिणांचल को एक स्वतन्त्रता सेनानी हमारे इस जगत से उठ गया है। माननीय जोशीजी के बारे में सदन के नेता ने और प्रतिपक्ष के नेता कई बातें कहीं। मुझे भी एक कार्यकर्ता के रूप में उनके साथ काम करते अवसर मिला। मैं उनकी विलक्षण बुद्धि, उनकी प्रतिभा और उनकी संगठन शक्ति का हमेशा कद्रदान रहा हूं। उन्होंने राजस्थान में मुझ जैसे सैंकड़ों कार्यकर्ताओं की फौज खड़ी की। आज वे हताश हैं, निराश हैं। जैसाकि सदन के नेता ने बताया, आदिवासी के जीवन को ऊंचा उठाने के लिये तत्पर रहते थे। अगर सच कहा जाए तो आदिवासी जीवन में, आदिवासी लोगों के आयाम को चेंज करने के लिये उन्होंने बहुत काम किया, माही नदी के पानी को इस धरती पर लाकर आदिवासियों का जीवन ऊंचा उठाया, जाखम नदी को बांधकर उन्होंने आदिवासियों का जीवन ऊंचा उठाया, सोम नदी और सोम कागदर नदी के पानी को लाकर आदिवासी के घर में पहुंचाया। यही उनका लगाव था आदिवासी के जीवन से। आदिवासियों की गरीबी को मिटाने का संकल्प उन्होंने लिया था। मुझे याद पड़ता है, कई मौके ऐसे आते थे जब कई लोग विचलित हो जाते थे लेकिन वह हमेशा निर्भिकता से और साहस से—चाहे प्रशासनिक हो, चाहे राजनीतिक, सूझबूझ से काम लेकर दृढ़ता से हमें निर्देश दिया करते थे। आज दक्षिणांचल तो बिल्कुल खाली नजर आता है। एक ब्राह्मण परिवार में पैदा हुआ व्यक्ति उसने हरिजन और गिरीजन को ऊंचा उठाने का जो संकल्प लिया और जो काम उन्होंने किया वह आने वाली पीढ़ी कभी भूल नहीं सकती।

जोशीजी आज हमारे बीच में नहीं रहे। लेकिन जो काम उन्होंने इस राजस्थान की धरती को ऊंचा उठाने के लिये, राजस्थान की जनता को ऊंचा के लिये किये वे सदैव, सदैव, सदैव याद रहते रहेंगे। मैं उन्हें अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि हम सब लोगों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे और उनके परिवारजनों को भी दुःख सहने की शक्ति दे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री राधेश्याम (गंगानगर) : उपाध्यक्ष महोदय, हाउस के नेता महोदय, हमारी पार्टी के नेता महोदय और समस्त पार्टियों के नेताओं द्वारा आज श्रद्धांजलि की इस श्रृंखला में मैं भी अपने आपको शामिल करते हुये प्रभु से प्रार्थना करता हूं। ऐसे व्यक्ति के जाने से आज वास्तव में ऐसा महसूस हो रहा है जैसे कांग्रेस पार्टी में और अपने प्रदेश से बहुत बड़ी जबरदस्त क्षति हुई जिसकी पूर्ति होना शायद

(श्री राधेश्याम)

ना मुमकिन है। वे ऐसे व्यक्ति थे जिनका मार्गदर्शन सारे राष्ट्र को मिला, राजस्थान को ही नहीं बल्कि राष्ट्र को मिला। वे अपनी कांस्टीट्यूएंसी से रेगुलर, हमेशा एक ही जगह से 1952 से लेकर आज तक, निर्वाचित हुए। गिनीज बुक में किसी दूसरे व्यक्ति का नाम नहीं है। बहुत सारी महान हस्तियां हुई लेकिन एक ही जगह से हमेशा वे ही जीतते रहे। इसका कारण यही रहा था। आने वाली हमारी पीढ़ी को यह मार्गदर्शन है उनके द्वारा। कुछ कार्य उन्होंने ऐसे किये जिनकी आज लोग इस हाउस के माध्यम से प्रशंसा कर रहे हैं। मुझे उनके दो वाक्य याद हैं। एक दफा राजस्थान कैनाल के ऊपर जब वे दौरा कर रहे थे सूरतगढ़ के पास बिरदवाल हैड पर, उन्होंने यह कहा हम काफी लोग खड़े थे, कार्यकर्ता लोग थे, उन्होंने यह कहा कि यह राजस्थान के लिये एक ऐसा वरदान सिद्ध होगा एक दिन कि सारा राजस्थान इससे पीएगा और खाएगा। और वह बात बिल्कुल हमारे जो आज के नेता हैं, वह उसको सिद्ध करने जा रहे हैं, वह उनकी कही हुई बात एक दिन सत्य होगी। इसी तरह उन्होंने एक दिन मंदिर की घटना सुनाई। एक मन्दिर के अन्दर किसी गरीब भील या हरिजन का पदार्पण हो रहा था तो काफी लोगों ने रोका।

(12·00)

लेकिन उन्होंने आगे बढ़कर उस बात को इस ढंग से बिल्कुल सुचारु रूप से किया ऐसी तरकीब से कि उनको अन्दर भी जाने दिया और कहीं खून खराबा भी नहीं होने दिया, कुछ भी नहीं होने दिया। गरीब के लिए उनके अन्दर बड़ी भारी तड़प थी और मैं तो खास कर उनका बहुत ऋणी हूं। 1970 में मैं नगर परिषद् का चेयरमैन था सुखाड़िया जी की मेहरबानी से। उसके बाद उन्होंने 1978 में मेरे को यहां से टेलीफोन से आदेश दिया था, जब कांग्रेस की बहुत बुरी हालत थी और सारी जगह कांग्रेस हार गई थी। उन्होंने यह आदेश दिया था कि चुनाव लड़ना है—हारे चाहे जीतें। एक वर्कर के नाते जबकि मेरी उस वक्त यह हिम्मत ही नहीं थी तो उनकी प्रेरणा के नाते मैं लड़ा। उस वक्त तो नहीं लेकिन 1980 में दुबारा उनकी प्रेरणा से जीत मिली। तो मेरे तो वे राजनीतिक गुरु थे।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं, निश्चित तौर पर ईश्वर के चरणों में ही उनका निवास हुआ है। उनके समस्त राजस्थान के सारे उनके जो प्यारे मित्र हैं, उनके रिश्तेदार, सम्बन्धी सबको भगवान शांति दे और उनके मार्ग दर्शन पर चलने का उनको बल बख्शे। धन्यवाद।

श्रीमती इन्दिरा मायाराम (सांगानेर) : माननीय उपाध्यक्ष जी, माननीय मुख्य मंत्री जी और विपक्ष के नेता, मैं अपने को रोक नहीं पा रही हूं क्योंकि जोशीजी के साथ मेरा बचपन से संबंध था। मेरे पिता और वे 1954 से जनरल सैक्रेटरी थे। प्रदेश कांग्रेस कमेटी में और तब से ही वे मुझे

(श्रीमती इन्दिरा मायाराम)

अपनी बच्ची की तरह से सदा मानते रहे हैं। अभी जैसा मुख्य मंत्री जी ने कहा, मेरे पिता कांग्रेस के अन्दर जो आपसी मतभेद होते हैं उसमें उनके विरोधी भी रहे और जब मैं भी युवक कांग्रेस में थी उनकी बहुत विरोधी रही। उसके बावजूद भी जब भी उनसे व्यक्तिगत काम पड़ा वे हमेशा यही कहते कि ये मतभेद तो राजनीतिक हैं 'तुम' मेरी लड़की की तरह हो और हम ऐसा ही व्यवहार करेंगे। मेरे पिता के लिये मैं कभी पूछने जाती थी, वे मुख्यमंत्री बने तब कि वे मिलना चाहते हैं, उनको बुजुर्ग की तरह मानते थे, तो कहते थे, वे मिलने नहीं आयेंगे मैं उनसे मिलने जाऊंगा। इतने मतभेद होते हुए भी। बल्कि अविश्वास के प्रस्ताव में भी मेरे पिता उनके खिलाफ रहते थे पार्टी के अन्दर, उसके बावजूद भी वे सहृदय व्यक्ति थे जिन्होंने राजस्थान के विकास में तो काम किया ही लेकिन विपक्ष में हों चाहे पक्ष में, कांग्रेस में जो भी लोग रहे सबको अपने साथी के रूप में माना। जैसा अभी कहा गया, शायद वह पीढ़ी अब धीरे धीरे कम हो रही है, मेरे पिता भी नहीं रहे। लेकिन उनको श्रद्धांजलि देना, मैं अपना कर्तव्य समझती हूं। जब वे पहली बार मुख्यमंत्री बने, मैं उनके घर गयी मिलने के लिये। उनकी पत्नी से मैंने कहा जी, आप मुझे पहचान गयीं तो उन्होंने कहा कि तुम तो हमारे प्रदेश कांग्रेस के दिन भूल गयीं जब मैं प्रदेश कांग्रेस में ऊपर रहती थी। इस प्रकार का, उनका पूरा परिवार समर्पित परिवार था। इसलिये मैं अपनी ओर से और अपनी सारी पार्टी की ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

श्री उपाध्यक्ष : शोकाभिव्यक्ति के इस अवसर पर इस सदन में माननीय सदन के नेता, प्रतिपक्ष दल के नेता, अन्य दलों के नेताओं एवं सदस्यों ने इस विधान सभा के वरिष्ठ सदस्य श्री हरिदेव जी जोशी के प्रति जो शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया है व संवेदना प्रकट की है उसमें मैं अपने आपको भारी दिल से सम्मिलित करता हूं।

राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री और वयोवृद्ध नेता श्री हरिदेव जी जोशी का जन्म 17 दिसम्बर, 1921 को बांसवाड़ा जिले के ग्राम खांदू में हुआ। आपने मैट्रिक एवं विशारद तक शिक्षा प्राप्त की।

15 वर्ष की अल्पायु में ही आदिवासी नेता श्री भोगीलाल जी पण्ड्या एवं गौरीशंकर जी उपाध्याय के साथ राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल हो गये। वर्ष 1942 के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में आपने सक्रिय रूप से भाग लिया तथा 1942, 1945 और 1947 में जेल यात्राएं कीं।

आप अनेक वर्ष तक अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद, बांसवाड़ा एवं डूंगरपुर के प्रतिनिधि रहे। देशी राज्य प्रजा परिषद (रीजनल कौंसिल) के भी सदस्य रहे।

वर्ष 1949 में रियासतों की प्रजा-मण्डल संस्थाओं का कांग्रेस में विलय होने के बाद श्री जोशी जी राजस्थान प्रदेश कांग्रेस और अखिल भारतीय कांग्रेस के सदस्य चुने गये। आप वर्ष 1952 से

(श्री उपाध्यक्ष)

1960 तक प्रदेश कांग्रेस के महामंत्री और मई, 1962 में अध्यक्ष बने।

श्री जोशीजी एकमात्र ऐसे विधायक थे जो पहली राजस्थान विधान सभा से वर्तमान दसवीं विधान सभा तक निरन्तर निर्वाचित होते रहे हैं, यह अपने आप में एक कीर्तिमान है।

आप 2 जून, 1965 को सुखाड़ियाजी के मन्त्रिमण्डल में प्रथम बार केबिनेट मंत्री के रूप में नियुक्त किये गये और 11 अक्टूबर, 1973 को प्रथम बार मुख्यमंत्री बनने तक श्री सुखाड़िया और बरकतुल्ला खां जी के सरकार में विभिन्न विभागों के मंत्री रहे। 10 मार्च, 1985 को आप दूसरी बार राज्य के मुख्यमंत्री बने। इसके बाद 4 दिसम्बर, 1989 से 4 मार्च, 1990 तक पुनः मुख्यमंत्री के पद पर आसीन रहे। वर्ष 1989 में 8 माह तक आप असम व मेघालय के राज्यपाल भी रहे। गत नवीं विधान सभा के कार्यकाल में आप प्रतिपक्ष दल के नेता भी रहे।

विधान सभा के दीर्घकालीन जीवन में आप मुख्य सचेतक एवं अनेक समितियों के सभापति भी रहे। आप राष्ट्रमण्डलीय संसदीय संघ की राजस्थान शाखा के वाइस प्रेसीडेण्ट भी रहे।

आदिवासी एवं पिछड़ी जाति के लोगों के आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहने वाले श्री जोशी जी की पत्रकारिता में भी विशेष रुचि रही। आप हिन्दी दैनिक 'नवयुग' के प्रधान सम्पादक रहे तथा प्रदेश कांग्रेस के मुख पत्र "कांग्रेस संदेश" साप्ताहिक के भी वर्षों तक सम्पादक रहे।

वरिष्ठ कांग्रेस नेता श्री जोशीजी का बीमारी के बाद आज प्रातः 8·30 बजे निधन हो गया है। आपके निधन से प्रदेश में एक सेवा भावी और लोक प्रिय नेता की कमी हो गई है।

मैं दिवंगत वरिष्ठ माननीय सदस्य को अपनी ओर से और इस सदन के समस्त माननीय सदस्यों की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें तथा उनके शोक संतप्त परिवारजनों को उनका बिछोह सहन करने की शक्ति दे।

वे मेवाड़ डिवीजन में या उदयपुर संभाग में एक अद्वितीय नेता थे, उनकी क्षति पर हम सबको बहुत कष्ट है। मैं माननीय सभी सदस्यों से निवेदन करूंगा कि वे दो मिनट खड़े होकर मौन श्रद्धांजलि अर्पित करें।

(तदनन्तर सदन ने दो मिनट मौन खड़े रहकर दिवंगत व्यक्ति की आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।)

सदन की कार्यवाही

पूर्व निर्धारित कार्य सूची में परिवर्तन

मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगा कि आज 28 तारीख को जो कार्य लिए जाने वाले थे वे इस वजह से नहीं लिए जा सकेंगे। सदन की कार्यवाही दिनांक

Page No.19

(श्री उपाध्यक्ष)

तीस मार्च, 1995 के प्रातः 11 बजे तक स्थगित किये जाने के पूर्व मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आज की कार्य सूची दिनांक 30 को ली जाय।

इस पर आपकी सहमति आवश्यक है। क्या आप सबकी सहमति है?

(स्वीकृत)

सहमति प्रदान की गयी।

आज की कार्यसूची 30 मार्च, 1995 को ली जाए।

सदन की कार्यवाही 30 मार्च, 1995 की सुबह 11·00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तद्नन्तर सदन की बैठक 12·10 बजे गुरुवार, दिनांक 30 मार्च, 1995 के 11·00 तक के लिए स्थगित हुई।)